Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LV (55), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

आदिवासी समुदाय की पारंपरिक औषधीय पद्धतियाँ एवं भारतीय अर्थव्यवस्था पर उनका प्रभाव

डॉ. सुल्तान मोरे*

* सहायक अध्यापक (अर्थशास्त्र) पद्म श्री स्व कांता बहन त्यागी शासकीय महाविद्यालय, निवाली (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – भारत में आदिवासी समुदाय सदियों से प्रकृति के साथ सहजीवन (Symbiotic relationship) स्थापित कर जीवन यापन करते आए हैं। इनके पारंपरिक ज्ञान में औषधीय पौधों का विशेष महत्व है। जंगलों में उपलब्ध जड़ी–बूटियों, पेड़ों, पौधों और खनिजों का उपयोग वे रोगों के उपचार में करते हैं। इस ज्ञान को एथ्नो–मेडिसिन (Ethnomedicine) या लोक–औषधि परंपरा कहा जाता है। यह परंपरा न केवल स्वास्थ्य संरक्षण में सहायक है बल्कि आदिवासी समाज की स्थानीय अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार भी है। वर्तमान समय में औषधीय पौधों का वैश्विक बाजार तेजी से बढ़ रहा है, जिससे आदिवासी समुदायों के लिए रोजगार और आय के नए अवसर उत्पन्न हो रहे हैं।

यह शोध–पत्र आदिवासी समुदायों की औषधीय परंपराओं, उनके ज्ञान–स्रोत, औषधीय पौधों के उपयोग तथा इनसे उत्पन्न आर्थिक संभावनाओं का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

शब्द कुंजी – आदिवासी समुदाय, पारंपरिक औषधीय पद्धतियाँ, एवं भारतीय अर्थव्यवस्था।

प्रस्तावना – भारत विविध संस्कृतियों, परंपराओं और समुदायों का देश है। इन समुदायों में आदिवासी समाज का विशेष स्थान है तथा आदिवासी समाज का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। आदिवासी समुदायों का जीवन प्रकृति के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। वे जंगलों, पहाड़ों और प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर रहते हैं। आदिवासी समाज की जीवन शैली, संस्कृति और पारंपरिक ज्ञान प्रणाली अत्यंत समृद्ध है। इनकी परंपराओं में औषधीय पौधों का उपयोग विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। आदिवासी लोग सदियों से जंगलों में उपलब्ध जड़ी–बूटियों का उपयोग विभिन्न रोगों के उपचार के लिए करते आए हैं।

इस पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली को लोक चिकित्सा या एथ्नो–मेडिसिन कहा जाता है। यह चिकित्सा पद्धति मुख्यत: प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित होती है और इसमें पौधों, जड़ों, पत्तियों, छाल, फल और बीजों का उपयोग किया जाता है। ये समुदाय प्रकृति के साथ घनिष्ठ संबंध रखते हैं और जंगलों, पहाड़ों तथा नदियों के आसपास निवास करते हैं। उनकी जीवन शैली, संस्कृति और स्वास्थ्य व्यवस्था प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित है। आदिवासी समाज में पारंपरिक चिकित्सक (Traditional Healers) को विभिन्न नामों से जाना जाता है जैसे –

- बैगा
- भुमका
- वैद्य
- गुनिया
- भगत

आदिवासी लोग पीढ़ी दर पीढ़ी जड़ी–बूटियों का ज्ञान प्राप्त करते हैं और स्थानीय लोगों का उपचार करते हैं। आज आधुनिक चिकित्सा प्रणाली के विकास के बावजूद आदिवासी समाज में पारंपरिक औषधीय ज्ञान की उपयोगिता बनी हुई है।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. आदिवासी समुदायों के औषधीय ज्ञान की प्रकृति को समझना।
2. औषधीय पौधों और जड़ी–बूटियों के उपयोग का अध्ययन करना।
3. आदिवासी औषधीय परंपरा और स्थानीय अर्थव्यवस्था के संबंध का विश्लेषण करना।
4. औषधीय पौधों के संरक्षण और विकास के लिए सुझाव देना।

3. शोध पद्धति – इस शोध–पत्र में निम्नलिखित पद्धतियों का उपयोग किया गया है –

1. द्वितीयक स्रोत
2. पुस्तकें, शोध पत्र, सरकारी रिपोर्ट, इंटरनेट स्रोत
3. वर्णनात्मक अध्ययन पद्धति
4. सामाजिक–आर्थिक विश्लेषण

साहित्य समीक्षा – आदिवासी औषधीय ज्ञान पर किए गए क्षेत्रीय अध्ययन भारत के विभिन्न राज्यों में आदिवासी औषधीय ज्ञान पर कई क्षेत्रीय अध्ययन किए गए हैं।

मध्य प्रदेश – मध्य प्रदेश में गोंड, भील, बैगा और बरेला जनजातियों के बीच किए गए अध्ययनों से पता चलता है कि ये समुदाय जंगलों में पाए जाने वाले पौधों का उपयोग अनेक रोगों के उपचार में करते हैं।

उदाहरण के लिए:

1. गिलोय का उपयोग बुखार और प्रतिरक्षा शक्ति बढ़ाने के लिए
2. नीम का उपयोग त्वचा रोगों के उपचार के लिए
3. आंवला का उपयोग पाचन और स्वास्थ्य सुधार के लिए

छत्तीसगढ़– छत्तीसगढ़ के आदिवासी समुदायों में भी पारंपरिक औषधीय

ज्ञान अत्यंत विकसित है। यहाँ के आदिवासी लोग जंगलों में मिलने वाली जड़ी-बूटियों का उपयोग सर्पदंश, बुखार और पाचन रोगों के उपचार के लिए करते हैं।

झारखंड और ओडिशा – झारखंड और ओडिशा के आदिवासी समुदायों में भी औषधीय पौधों का व्यापक उपयोग किया जाता है। कई शोधों में पाया गया है कि इन क्षेत्रों के पारंपरिक चिकित्सकों को सैकड़ों प्रकार के पौधों की जानकारी होती है।

साहित्य समीक्षा से प्राप्त निष्कर्ष – उपलब्ध साहित्य के अध्ययन से निम्नलिखित प्रमुख निष्कर्ष सामने आते हैं :

1. आदिवासी समुदायों के पास औषधीय पौधों का अत्यंत समृद्ध पारंपरिक ज्ञान उपलब्ध है।
2. यह ज्ञान मुख्यत: मौखिक परंपरा के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता रहा है।
3. औषधीय पौधों का उपयोग स्वास्थ्य संरक्षण के साथ-साथ आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
4. आधुनिक समय में इस पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण और वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता बढ़ गई है।

अध्ययन का सार– इस अध्याय में आदिवासी औषधीय ज्ञान से संबंधित विभिन्न पुस्तकों, शोध पत्रों और रिपोर्टों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि आदिवासी समुदायों की पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली अत्यंत महत्वपूर्ण और उपयोगी है।

आगे के अध्याय में आदिवासी समुदायों के औषधीय ज्ञान, प्रमुख जड़ी-बूटियों तथा उनके उपयोग का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया जाएगा। इन पौधों को आयुर्वेद में त्रिफला के रूप में भी जाना जाता है।

अध्ययन का महत्व– इस अध्ययन का महत्व निम्नलिखित कारणों से है:

1. आदिवासी पारंपरिक ज्ञान का संरक्षण
2. औषधीय पौधों की पहचान और उपयोग का अध्ययन
3. आदिवासी अर्थव्यवस्था में औषधीय संसाधनों की भूमिका का विश्लेषण
4. ग्रामीण और जनजातीय विकास के लिए नए अवसरों की पहचान

यह अध्ययन आदिवासी समाज की पारंपरिक ज्ञान प्रणाली को समझने और उसके आर्थिक महत्व को उजागर करने में सहायक होगा।

अध्ययन की सीमाएँ – इस अध्ययन की कुछ सीमाएँ भी हैं:

1. सभी आदिवासी समुदायों का विस्तृत अध्ययन संभव नहीं है।
2. पारंपरिक ज्ञान मौखिक परंपरा में होने के कारण कुछ जानकारी सीमित हो सकती है।
3. अध्ययन मुख्यत: उपलब्ध साहित्य और रिपोर्टों पर आधारित है।

4. भारत में आदिवासी समुदाय– भारत में लगभग 700 से अधिक जनजातियाँ पाई जाती हैं। ये मुख्यत: निम्न राज्यों में निवास करती हैं:

- मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, ओडिशा, गुजरात राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश में प्रमुख जनजातियाँ : भील, गोंड, बैगा, बरेला, भीलाला, कोरकू आदि । इन समुदायों का जीवन जंगलों और प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित है।

आदिवासी समुदाय और प्रकृति का संबंध –आदिवासी समाज का प्रकृति के साथ गहरा और संतुलित संबंध होता है। वे जंगलों को केवल संसाधन नहीं बल्कि जीवन का आधार मानते हैं। उनकी संस्कृति में पेड़-पौधों, नदियों और पहाड़ों का धार्मिक और सामाजिक महत्व होता है। कई आदिवासी समुदाय विशेष पेड़ों को पवित्र मानते हैं और उनकी पूजा करते हैं। प्रकृति के साथ इस घनिष्ठ संबंध के कारण आदिवासी लोगों को विभिन्न पौधों के गुणों और उपयोगों की गहरी जानकारी होती है।

5. आदिवासी औषधीय ज्ञान– आदिवासी समाज में औषधीय ज्ञान को पारंपरिक ज्ञान प्रणाली कहा जाता है। यह ज्ञान मुख्यत: निम्न स्रोतों से प्राप्त होता है:

1. अनुभव आधारित ज्ञान
2. पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरण
3. प्राकृतिक संसाधनों का अवलोकन

आदिवासी लोग पौधों के निम्न भागों का उपयोग करते हैं:

- जड़, छाल, पत्तो, फल, फूल, बीज – इनसे विभिन्न रोगों का उपचार किया जाता है।

आदिवासी औषधीय ज्ञान की विशेषताएँ – आदिवासी लोग जंगलों में उपलब्ध पौधों की पहचान और उनके औषधीय गुणों के बारे में विस्तृत ज्ञान रखते हैं। आदिवासी औषधीय चिकित्सा प्रणाली की कई विशेषताएँ हैं:

1. प्राकृतिक आधारित चिकित्सा – यह पूरी तरह से प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित होती है।

2. सस्ती और सुलभ– यह चिकित्सा प्रणाली आर्थिक रूप से सस्ती होती है और ग्रामीण क्षेत्रों में आसानी से उपलब्ध होती है।

3. कम दुष्प्रभाव – अधिकांश प्राकृतिक औषधियों के दुष्प्रभाव कम होते हैं।

4. पर्यावरण के अनुकूल – यह चिकित्सा प्रणाली पर्यावरण के संरक्षण को भी बढ़ावा देती है।

5. पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित ज्ञान
6. स्थानीय उपलब्धता
7. कम लागत

6. प्रमुख औषधीय पौधे का महत्व और उनका उपयोग – औषधीय पौधे मानव स्वास्थ्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इनका उपयोग आयुर्वेद, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी जैसी पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों में किया जाता है। भारत में हजारों प्रकार के औषधीय पौधे पाए जाते हैं। इनमें से अनेक पौधों की जानकारी आदिवासी समुदायों के पास पारंपरिक रूप से उपलब्ध है। कुछ प्रमुख औषधीय पौधे हैं :

1. नीम – उपयोग : त्वचा रोग, संक्रमण, दांतों की समस्या
2. तुलसी – उपयोग: सर्दी-खांसी, बुखार, श्वसन रोग
3. गिलोय – उपयोग: प्रतिरक्षा शक्ति बढ़ाने में, बुखार, मधुमेह नियंत्रण
4. अश्वगंधा – उपयोग: कमजोरी, तनाव, मानसिक स्वास्थ्य
5. आंवला – उपयोग : विटामिन C, पाचन, बाल और त्वचा स्वास्थ्य।
6. सफेद मूसली – सफेद मूसली एक गुणकारी आयुर्वेदिक जड़ी-बूटी है। यह शारीरिक कमजोरी दूर करने, स्टेमिना बढ़ाने, और रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्यूनिटी) को मजबूत करने के लिए उपयोग की जाती है। पुरुष और महिला दोनों इसका सेवन कर सकते हैं।
7. कालमेघ – प्रसिद्ध है, जिसे 'कड़वाहट का राजा' (Kings of Bitters) भी कहा जाता है। यह मुख्य रूप से लिवर को स्वस्थ रखने, पाचन तंत्र सुधारने और शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्यूनिटी) बढ़ाने के

लिए उपयोग किया जाता है।

त्वचा रोगों के उपचार के पौधे – आदिवासी समाज त्वचा संबंधी रोगों के उपचार के लिए कई प्राकृतिक औषधियों का उपयोग करता है।

उदाहरण:

1. नीम
2. हल्दी
3. एलोवेरा

इन पौधों में जीवाणुरोधी और सूजनरोधी गुण पाए जाते हैं।

हड्डी और मांसपेशियों के रोग– हड्डी टूटने या मांसपेशियों में दर्द होने पर कुछ विशेष पौधों का उपयोग किया जाता है

उदाहरण:

1. हड़जोड़
2. अश्वगंधा

इन पौधों का उपयोग दर्द कम करने और हड्डियों को मजबूत करने के लिए किया जाता है।

आदिवासी लोग इन पौधों का उपयोग प्राकृतिक उपचार के रूप में करते हैं।

औषधि तैयार करने की विधियाँ – आदिवासी समुदायों में औषधि तैयार करने की कई पारंपरिक विधियाँ प्रचलित हैं।

1. काढ़ा – जड़ी–बूटियों को पानी में उबालकर काढ़ा तैयार किया जाता है। यह विधि बुखार, सर्दी–खांसी और संक्रमण के उपचार में उपयोगी होती है।

2. लेप – कुछ पौधों की पत्तियों या जड़ों को पीसकर लेप बनाया जाता है और उसे शरीर के प्रभावित भाग पर लगाया जाता है।

यह विधि मुख्यत:

1. घाव
2. त्वचा रोग
3. सूजन

के उपचार में उपयोग की जाती है।

3. रस – कुछ पौधों का रस निकालकर सीधे पिलाया जाता है। यह पाचन और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहायक होता है।

4. चूर्ण – कुछ जड़ी–बूटियों को सुखाकर उनका चूर्ण बनाया जाता है और उसे पानी या दूध के साथ लिया जाता है।

7. आदिवासी औषधि और स्वास्थ्य प्रणाली– आदिवासी चिकित्सा प्रणाली निम्न सिद्धांतों पर आधारित है:

1. प्रकृति के साथ संतुलन
2. शरीर और मन का समन्वय
3. प्राकृतिक उपचार

इस चिकित्सा पद्धति के लाभ:

1. कम खर्च
2. स्थानीय उपलब्धता
3. कम दुष्प्रभाव

अध्याय का सार – इस अध्याय में आदिवासी समुदायों की पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली, औषधीय पौधों के उपयोग और पारंपरिक चिकित्सकों की भूमिका का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। यह स्पष्ट होता है कि आदिवासी समाज का औषधीय ज्ञान अत्यंत समृद्ध और वैज्ञानिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

8. औषधीय पौधे का ज्ञान और आदिवासी अर्थव्यवस्था – औषधीय पौधों का आदिवासी अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान है। वे जंगलों से जड़ी–बूटियों का संग्रह करते हैं और उन्हें स्थानीय बाजारों या औषधीय कंपनियों को बेचते हैं। इससे उन्हें अतिरिक्त आय प्राप्त होती है। आज विश्व स्तर पर औषधीय पौधों की मांग तेजी से बढ़ रही है। आयुर्वेदिक और हर्बल उत्पादों के बढ़ते उपयोग के कारण यह क्षेत्र आर्थिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण बन गया है।

आय के स्रोत :

1. जड़ी–बूटियों का संग्रह
2. औषधीय पौधों की बिक्री
3. आयुर्वेदिक कंपनियों को आपूर्ति
4. जंगल उत्पादों का व्यापार

भारत में औषधीय पौधों का बाजार लगातार बढ़ रहा है।

उदाहरण:

1. अश्वगंधा
2. सफेद मूसली
3. सर्पगंधा
4. कालमेघ

इन पौधों की मांग आयुर्वेदिक और फार्मास्यूटिकल उद्योगों में अधिक है। आदिवासी समुदायों के लिए औषधीय पौधे केवल स्वास्थ्य का साधन ही नहीं बल्कि आय का स्रोत भी हैं।

अध्याय का सार – इस अध्याय में आदिवासी समुदाय, उनके पारंपरिक औषधीय ज्ञान और प्रकृति के साथ उनके संबंध का परिचय प्रस्तुत किया गया है। साथ ही औषधीय पौधों के महत्व और आदिवासी अर्थव्यवस्था में उनकी भूमिका को भी स्पष्ट किया गया है।

आधुनिक चिकित्सा और पारंपरिक ज्ञान – वर्तमान समय में आधुनिक चिकित्सा प्रणाली का विकास तेजी से हुआ है। इसके बावजूद आदिवासी समुदायों में पारंपरिक चिकित्सा का महत्व बना हुआ है।

आज कई वैज्ञानिक संस्थान और शोधकर्ता आदिवासी औषधीय ज्ञान का अध्ययन कर रहे हैं ताकि नए औषधीय उत्पाद विकसित किए जा सकें।

आदिवासी समाज में स्वास्थ्य और संस्कृति – आदिवासी समाज में स्वास्थ्य केवल शारीरिक स्थिति नहीं बल्कि सामाजिक और आध्यात्मिक संतुलन का प्रतीक माना जाता है।

कई आदिवासी समुदायों में रोगों को केवल शारीरिक कारणों से नहीं बल्कि आध्यात्मिक कारणों से भी जोड़ा जाता है। इसलिए कई उपचार पद्धतियों में धार्मिक अनुष्ठानों और पूजा का भी उपयोग किया जाता है।

रोजगार के अवसर – औषधीय पौधों के क्षेत्र में आदिवासी समुदायों के लिए कई प्रकार के रोजगार उपलब्ध हो सकते हैं।

1. जड़ी–बूटियों का संग्रह – यह आदिवासी समुदायों के लिए आय का पारंपरिक स्रोत है।

2. औषधीय पौधों की खेती – कई किसान अब औषधीय पौधों की खेती कर रहे हैं।

3. प्रसंस्करण उद्योग – जड़ी–बूटियों को सुखाने, पैक करने और प्रसंस्करण करने के लिए छोटे उद्योग स्थापित किए जा सकते हैं।

4. हर्बल उत्पाद निर्माण – स्थानीय स्तर पर हर्बल उत्पाद बनाकर बाजार

में बेचे जा सकते हैं।

औषधीय पौधों और अर्थव्यवस्था पर अध्ययन – कई शोधकर्ताओं ने औषधीय पौधों के आर्थिक महत्व का भी अध्ययन किया है। इन अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि:

1. औषधीय पौधों का व्यापार ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में आय का महत्वपूर्ण स्रोत बन सकता है।
2. हर्बल उद्योग के विकास से रोजगार के नए अवसर उत्पन्न होते हैं।
3. औषधीय पौधों की खेती से किसानों की आय बढ़ सकती है।

भारत में आयुर्वेदिक और हर्बल उत्पादों की बढ़ती मांग के कारण औषधीय पौधों का बाजार तेजी से विकसित हो रहा है।

9. औषधीय पौधों का वैश्विक बाजार– विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार:

- लगभग 80% लोग पारंपरिक चिकित्सा पर निर्भर हैं
- औषधीय पौधों का वैश्विक बाजार 100 बिलियन डॉलर से अधिक है।

भारत में भी आयुर्वेदिक उत्पादों की मांग तेजी से बढ़ रही है।

आदिवासी ज्ञान के सामने चुनौतियाँ:

1. वनों की कटाई
2. पारंपरिक ज्ञान का लोप
3. आधुनिक चिकित्सा का प्रभाव
4. औषधीय पौधों का अत्यधिक दोहन
5. बाजार तक पहुंच की कमी

इन कारणों से आदिवासी औषधीय परंपरा धीरे-धीरे कमजोर हो रही है।

औषधीय पौधों का संरक्षण विकास के उपाय – आदिवासी समुदायों ने पारंपरिक रूप से जंगलों और पौधों के संरक्षण की कई विधियाँ विकसित की हैं।

उदाहरण:

1. पवित्र वन (Sacred Groves) की परंपरा
2. विशेष पेड़ों की पूजा
3. पौधों का सीमित उपयोग

इन परंपराओं के कारण जैव विविधता का संरक्षण होता है।

1. औषधीय पौधों का संरक्षण
2. आदिवासी ज्ञान का दस्तावेजीकरण
3. सरकारी योजनाओं का विस्तार
4. औषधीय पौधों की खेती को बढ़ावा
5. आदिवासी समुदायों को प्रशिक्षण

भारत सरकार ने इस दिशा में कई योजनाएँ शुरू की हैं।

उदाहरण:

- राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड (NMPB)
- आयुष मंत्रालय

सरकारी योजनाएँ और पहल – भारत सरकार और विभिन्न राज्य सरकारों ने औषधीय पौधों के विकास के लिए कई योजनाएँ शुरू की हैं।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड – यह संस्था औषधीय पौधों के संरक्षण और विकास के लिए कार्य करती है।

इसके प्रमुख उद्देश्य हैं:

1. औषधीय पौधों की खेती को बढ़ावा देना
2. किसानों को प्रशिक्षण देना
3. औषधीय पौधों के संरक्षण को बढ़ावा देना

आयुष मंत्रालय की भूमिका– भारत सरकार का आयुष मंत्रालय पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों को बढ़ावा देने के लिए कार्य करता है।

इस मंत्रालय के माध्यम से औषधीय पौधों के अनुसंधान और विकास को प्रोत्साहित किया जाता है।

आदिवासी अर्थव्यवस्था पर प्रभाव – औषधीय पौधों का व्यापार आदिवासी समुदायों की अर्थव्यवस्था को कई प्रकार से प्रभावित करता है।

सकारात्मक प्रभाव:

1. आय में वृद्धि
2. रोजगार के अवसर
3. ग्रामीण विकास
4. पारंपरिक ज्ञान का संरक्षण

नकारात्मक प्रभाव:

1. अत्यधिक दोहन से पौधों की कमी
2. व्यापार में बिचौलियों की भूमिका
3. उचित मूल्य का अभाव

सतत विकास की आवश्यकता – औषधीय पौधों का उपयोग सतत विकास के सिद्धांतों के अनुसार होना चाहिए। इसके लिए निम्नलिखित उपाय आवश्यक हैं:

1. पौधों का संरक्षण
2. वैज्ञानिक तरीके से खेती
3. आदिवासी समुदायों को उचित मूल्य
4. स्थानीय स्तर पर प्रसंस्करण उद्योगों की स्थापना

3. बाजार तक सीमित पहुँच – अधिकांश आदिवासी समुदायों को औषधीय पौधों के उचित बाजार तक पहुँच नहीं मिल पाती।

अक्सर बिचौलिये कम कीमत पर जड़ी-बूटियाँ खरीद लेते हैं, जिससे आदिवासी लोगों को उचित लाभ नहीं मिल पाता।

4. वैज्ञानिक अनुसंधान की कमी – हालाँकि आदिवासी औषधीय ज्ञान अत्यंत महत्वपूर्ण है, फिर भी इस पर पर्याप्त वैज्ञानिक अनुसंधान नहीं हुआ है।

यदि इस ज्ञान का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाए तो नई औषधियों का विकास संभव है।

5. संरक्षण की कमी – कई औषधीय पौधों का अत्यधिक दोहन किया जा रहा है, जिससे उनकी संख्या कम हो रही है।

यदि समय रहते संरक्षण के उपाय नहीं किए गए तो कई महत्वपूर्ण प्रजातियाँ विलुप्त हो सकती हैं।

सुझाव – आदिवासी औषधीय ज्ञान के संरक्षण और विकास के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं:

1. पारंपरिक ज्ञान का दस्तावेजीकरण – आदिवासी समुदायों के औषधीय ज्ञान को लिखित रूप में दर्ज करना आवश्यक है ताकि यह भविष्य की पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रह सके।

2. औषधीय पौधों का संरक्षण – वनों और जैव विविधता के संरक्षण के लिए विशेष कार्यक्रम चलाए जाने चाहिए।

3. औषधीय पौधों की खेती को बढ़ावा – किसानों और आदिवासी समुदायों को औषधीय पौधों की वैज्ञानिक खेती के लिए प्रशिक्षण दिया

जाना चाहिए।

4. बाजार सुविधाओं का विकास – सरकार और सहकारी संस्थाओं को आदिवासी समुदायों को उचित बाजार और उचित मूल्य उपलब्ध कराने के लिए प्रयास करने चाहिए।

5. अनुसंधान और शिक्षा – विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों को आदिवासी औषधीय ज्ञान पर अधिक शोध करना चाहिए।

अध्याय का सार – इस अध्याय में आदिवासी औषधीय ज्ञान के सामाजिक और आर्थिक महत्व का विश्लेषण किया गया है। साथ ही इस क्षेत्र में मौजूद चुनौतियों और उनके समाधान के लिए सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।

निष्कर्ष – प्रस्तुत शोध-अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि आदिवासी समुदायों का औषधीय ज्ञान अत्यंत महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और वैज्ञानिक धरोहर है। आदिवासी समाज सदियों से प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित कर जीवन यापन करता आया है। जंगलों में पाए जाने वाले पौधों, जड़ों, पत्तियों और जड़ी-बूटियों का उपयोग वे विभिन्न रोगों के उपचार के लिए करते हैं। यह पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली स्वास्थ्य संरक्षण के साथ-साथ आदिवासी संस्कृति का भी महत्वपूर्ण हिस्सा है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि औषधीय पौधे आदिवासी समुदायों की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जड़ी-बूटियों का संग्रह और व्यापार कई परिवारों के लिए आय का महत्वपूर्ण स्रोत है। वर्तमान समय में हर्बल और आयुर्वेदिक उत्पादों की बढ़ती मांग के कारण औषधीय पौधों का महत्व और अधिक बढ़ गया है।

हालाँकि इस क्षेत्र में कई चुनौतियाँ भी मौजूद हैं जैसे:

1. वनों की कटाई
2. पारंपरिक ज्ञान का लोप
3. बाजार तक सीमित पहुँच
4. औषधीय पौधों का अत्यधिक दोहन

इन समस्याओं के समाधान के लिए आवश्यक है कि आदिवासी समुदायों के पारंपरिक ज्ञान का संरक्षण किया जाए और उन्हें आर्थिक विकास की मुख्यधारा से जोड़ा जाए।

यदि उचित नीतियाँ और कार्यक्रम लागू किए जाएँ तो औषधीय पौधों के माध्यम से आदिवासी क्षेत्रों में सतत विकास को बढ़ावा दिया जा सकता है।

आदिवासी समुदायों का औषधीय ज्ञान अत्यंत महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और वैज्ञानिक धरोहर है। यह ज्ञान न केवल स्वास्थ्य संरक्षण में सहायक है बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

यदि इस ज्ञान का सही संरक्षण और वैज्ञानिक उपयोग किया जाए तो यह:

1. ग्रामीण और आदिवासी अर्थव्यवस्था को मजबूत कर सकता है
2. औषधीय उद्योग को बढ़ावा दे सकता है
3. प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में सहायक हो सकता है

इसलिए आवश्यक है कि आदिवासी समुदायों के पारंपरिक ज्ञान का सम्मान किया जाए और उन्हें आर्थिक विकास की मुख्यधारा से जोड़ा जाए।

टिप्पणी – इस शोध-प्रबंध के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि आदिवासी समुदायों का औषधीय ज्ञान न केवल सांस्कृतिक धरोहर है बल्कि भविष्य की स्वास्थ्य प्रणाली और अर्थव्यवस्था के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. WHO (World Health Organization). *Traditional Medicine Strategy.*
2. Ministry of AYUSH, Government of India.
3. Gadgil, M. & Guha, R. (1995). *Ecology and Equity.*
4. Jain, S.K. (1991). *Dictionary of Indian Folk Medicine.*
5. National Medicinal Plants Board (NMPB) Report
6. Gadgil, M., & Guha, R. (1995). *Ecology and Equity: The Use and Abuse of Nature in Contemporary India.* New Delhi: Oxford University Press.
7. Jain, S. K. (1991). *Dictionary of Indian Folk Medicine and Ethnobotany.* New Delhi: Deep Publications.
8. Ministry of AYUSH. (2018). *National Policy on Medicinal Plants.* Government of India.
9. National Medicinal Plants Board. (2020). *Medicinal Plants Statistics and Report.* New Delhi: Government of India.
10. World Health Organization. (2013). *WHO Traditional Medicine Strategy.* Geneva: WHO Press.
11. Gadgil, Madhav, and Ramachandra Guha. *Ecology and Equity.* Oxford University Press, 1995.
12. Jain, S. K. *Dictionary of Indian Folk Medicine and Ethnobotany.* Deep Publications, 1991.
13. Ministry of AYUSH. *National Policy on Medicinal Plants.* Government of India, 2018.
14. National Medicinal Plants Board. *Medicinal Plants Statistics and Report.* Government of India, 2020.
15. World Health Organization. *Traditional Medicine Strategy.* WHO Press, 2013.

****